अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : सातवीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) गोत्र कर्म का बंध कौनसे गुणस्थान तक निरन्तर होता है-
(क) 7 वें तक (ख) 9 वें तक
(ग) 14 वें तक (घ) 10 वें तक (घ)

(ii) सवेदी में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 10 (ख) 11
(ग) 9 (घ) 12 (ग)

(iii) वायुकाय के जीवों में 47 बोलों में से कितने बोल मिलते हैं-
(क) 27 (ख) 26
(ग) 31 (घ) 33 (ख)

(iv) 47 बोलों में से तिर्यंच पंचेन्द्रिय में यह बोल नहीं पाया जाता है-
(क) अवेदी (ख) शुक्ल लेश्या
(ग) पुरुषवेद (घ) मनयोग (क)

(v) जीव पज्जवा के थोकड़े में वनस्पति काय के अलावे हैं-
(क) 75 (ख) 25
(ग) 375 (घ) 93 (क)

(vi) जघन्य स्थिति वाले दो पृथ्वीकाय की तुलना करने पर स्थिति की अपेक्षा होते हैं-
(क) त्रिस्थानपतित (ख) तुल्य
(ग) चतुःस्थानपतित (घ) एकस्थानपतित (ख)

(vii) जघन्य मतिज्ञान वाले दो बेइन्द्रिय की तुलना करने पर स्थिति की अपेक्षा होते हैं-
(क) तुल्य (ख) चतुःस्थानपतित
(ग) त्रिस्थानपतित (घ) एकस्थानपतित (ग)

(viii) जघन्य अवगाहना वाले दो तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तुलना करने पर स्थिति की अपेक्षा होते हैं-
(क) तुल्य (ख) एकस्थानपतित
(ग) चतुःस्थानपतित (घ) त्रिस्थानपतित (घ)

(ix) जघन्य अवधि ज्ञान वाले दो मनुष्यों की तुलना करने पर कितने उपयोग से षट्स्थानपतित होता है-
(क) 6 (ख) 7
(ग) 10 (घ) 4 (क)

(x) अनाहारक में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 4 (घ) 5 (घ)

(xi) चरम में कर्मों के बंध की नियमा-भजना होती है-
(क) 8 कर्मों के बंध की भजना (ख) 8 कर्मों की नियमा
(ग) 8 कर्मों का अबंध (घ) 7 की भजना आयु का अबंध (क)

(xii) 8 कर्मों का अबंध होता है-
(क) सम्यग्दृष्टि में (ख) अवेदी में
(ग) नो संज्ञी नो असंज्ञी (घ) नो भव्य नो अभव्य (घ)

(xiii) सातावेदनीय वेदने वाले की राशि हैं-
(क) 240 (ख) 8
(ग) 32 (घ) 16 (घ)

(xiv) अजीव पज्जवा का थोकड़ा चलता है-
(क) प्रज्ञापना सूत्र में (ख) भगवती सूत्र में
(ग) नन्दी सूत्र में (घ) अनुयोग द्वार सूत्र में (क)

(xv) रूपी अजीव की पर्याय के भेद नहीं हैं-
(क) स्कन्ध (ख) स्कन्ध का देश
(ग) स्कन्ध का प्रदेश (घ) तीनों ही (बोनस अंक)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) शुक्ल लेशी जीव भी अभवी हो सकता है। (हाँ)
(ii) छठे गुणस्थान में जो शुभयोगी होते हैं, उनमें संज्ञा नहीं होती है। (हाँ)
(iii) वेदनीय कर्म का बंध 1 से 14 वें गुणस्थान तक निरन्तर होता है। (नहीं)
(iv) 5 अनुत्तर विमान के देव कृष्ण पाक्षिक नहीं होते हैं। (हाँ)
(v) उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्यों में स्थिति की अपेक्षा एकस्थानपतित होता है। (हाँ)
(vi) युगलिकों में उत्कृष्ट उपयोग नहीं होते हैं। (हाँ)
(vii) एक पल्योपम असंख्यात हजार वर्षों का होता है। (हाँ)
(viii) उत्पत्ति के प्रथम समय से मध्यम अवगाहना मानी जाती है। (नहीं)
(ix) नारकी में उत्कृष्ट अवगाहना वाले छठी-सातवीं नरक में ही मिलते हैं। (नहीं)
(x) विभंग ज्ञान में 7 कर्मों के बंध की नियमा और आयु की भजना है। (हाँ)
(xi) केवल दर्शन में वेदनीय कर्म की भजना तथा 7 कर्मों का अबंध है। (हाँ)
(xii) सूक्ष्म जीवों में अपर्याप्त की अपेक्षा पर्याप्त जीव अधिक होते हैं। (हाँ)
(xiii) साकार उपयोग वालों से नो इन्द्रिय उपयोग वाले संख्यात गुणा है। (नहीं)
(xiv) जघन्य अवगाहना वाले पुद्गलों की आपस में तुलना करने पर प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थानपतित होते हैं। (हाँ)
(xv) जघन्य स्थिति वाले परमाणु पुद्गल की तुलना करने पर वर्णादि 16 बोलों की अपेक्षा षट्स्थानपतित होते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(i)	दुर्लभ बोधि	(क) चौथा भंग	वायुकाय
(ii)	वेदनीय कर्म आश्री अकषायी में	(ख) पहला, तीसरा, चौथा भंग	पहला, दूसरा, चौथा भंग
(iii)	आयुकर्म आश्री अयोगी में	(ग) मतिज्ञान	चौथा भंग
(iv)	आयुकर्म आश्री मनःपर्यव ज्ञानी में	(घ) वायुकाय	पहला, तीसरा, चौथा भंग
(v)	मोहनीय कर्म आश्री अवेदी में	(च) अनाहारक	चारों भंग
(vi)	7 की भजना, वेदनीय की नियमा	(छ) 252	मतिज्ञान
(vii)	7 की नियमा, आयु की भजना	(ज) पहला, दूसरा, चौथा भंग	अपरीत
(viii)	8 कर्मों की भजना	(झ) 39	पर्याप्त
(ix)	7 की भजना, आयु का अबंध	(य) पर्याप्त	अनाहारक
(x)	जागृत	(र) 35	252
(xi)	साकार उपयोग वाले	(ल) चारों भंग	192
(xii)	स्थिति के अलावे	(व) 60	39
(xiii)	समुच्चय भाव के अलावे	(क्ष) एक स्थानपतित	60
(xiv)	अवगाहना के अलावे	(त्र) 192	35
(xv)	असंख्यात भागहीन और असंख्यात भाग अधिक	(ज्ञ) अपरीत	एकस्थानपतित

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मेरे सभी बोलों में आयु कर्म आश्री पहला-तीसरा भंग ही पाया जाता है। तेउकाय, वायुकाय
(ii) मेरे प्रथम समय में घण्टा लाला न्याय के अनुसार शुक्ल लेशीपने का अंश रहता है। 14 वें गुणस्थान
(iii) मुझमें 50 बोल की बंधी में 50 में से मात्र 22 बोल ही पाये जाते हैं। असंज्ञी मनुष्य
(iv) मेरा बंध काल लगभग 1 आवलिका के आस-पास संभव है। आयु कर्म
(v) मुझमें लब्धि अपर्याप्त एवं करण अपर्याप्त दोनों का ही समावेश हो जाता है। सुप्त

(vi) स्थिति जीवन पर्यन्त की होती है जबकि मैं वर्तमान समय की होती हूँ। अवगाहना

(vii) बाटे बहती अवस्था में भी लब्धि की अपेक्षा मैं संभव हूँ। चक्षुदर्शन

(viii) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्कृष्ट अवगाहना मेरी न होकर संख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंचों की होती है। युगलिक

(ix) उत्कृष्ट अवधिज्ञान परमावधि ज्ञान होने पर अन्तर्मुहूर्त्त में मेरे प्राप्त होने की नियमा है। केवलज्ञान

(x) हम एकान्त सम्यग्दृष्टि होते हैं। 5 अनुत्तर विमान के देव

(xi) छह द्रव्यों में मात्र मैं ही रूपी द्रव्य हूँ। पुद्गलास्तिकाय

(xii) मुझमें मिलने एवं बिखरने का गुण होता है। पुद्गल

(xiii) हम अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होने पर सूक्ष्म भाव में परिणत होने के कारण एक आकाश प्रदेश पर भी ठहर सकते हैं। चौफरसी

(xiv) मेरा अनन्त संसार बाकी है, इसलिये आयु कर्म आश्री चौथा भंग मुझमें नहीं होता है। कृष्ण पक्षी

(xv) मैं एक ऐसा कर्म हूँ, जिसकी विशेष उदीरणा वेदनीय समुद्घात से होती है। असाता वेदनीय कर्म

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) पृथ्वीकाय के 27 बोलों में आयुकर्म आश्री पाये जाने वाले भंग लिखिए।

उ. तेजो लेशी में केवल तीसरा भांगा ही पाया जाता है।
कृष्ण पक्षी में पहला, तीसरा भांगा पाया जाता है।
शेष 25 बोल में चारों भांगे पाये जाते हैं।

(ii) सर्वार्थ सिद्ध देव में आयु कर्म आश्री प्रथम भंग घटित क्यों नहीं होता है ?

उ. सर्वार्थसिद्ध में जो आयुष्य का बंध कर रहा है, वह अगले भव में निश्चित मोक्ष का अधिकारी है, वह आगे आयुष्य का बंध नहीं कर सकता है अतः पहला भांगा घटित नहीं होता है।

(iii) तिर्यंचों में जघन्य अवगाहना में अवधिज्ञान क्यों नहीं लिया ?

उ. सामान्य तिर्यंचों में जघन्य अवगाहना उत्पत्ति के समय में होती है। उत्पत्ति के समय में तथा अपर्याप्त अवस्था में इनमें अवधिज्ञान अथवा विभंगज्ञान संभव नहीं हैं।

(iv) मनःपर्यवज्ञानी मारणान्तिक समुद्घात नहीं करता है। इसका कारण लिखिए।

उ. मनःपर्याय ज्ञानी की अवगाहना त्रिस्थानपतित ही बतलाई है, इससे सिद्ध होता है कि वह मारणान्तिक समुद्घात नहीं करता है। यदि मारणान्तिक समुद्घात करता तो उसकी अवगाहना चतुस्थानपतित हो जाती है।

(v) जघन्य अवधि दर्शन वाले मनुष्यों की तुलना करते हुए अवगाहना, स्थिति एवं उपयोगों की अपेक्षा कथन कीजिए।

उ. अवगाहना की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि के पर्यायों की अपेक्षा और 9 उपयोग (चार ज्ञान, तीन अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है तथा अवधिदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है।

(vi) अजीव पज्जवा थोकड़े में द्विस्थानपतित किसे कहा गया है ?

उ. द्विस्थानपतित से आशय- 1. संख्यात भाग हीन, संख्यात भाग अधिक, 2. संख्यात गुण हीन, संख्यात गुण अधिक से हैं।

(vii) द्विप्रदेशी स्कन्ध की आपस में प्रदेश, अवगाहना तथा स्थिति की अपेक्षा तुलना कीजिए।

उ. प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन, कथंचित् तुल्य और कथंचित् अधिक होता है। स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है।

(viii) असंख्यात प्रदेशावगाढ़ पुद्गल की आपस में प्रदेश, अवगाहना तथा स्थिति की अपेक्षा तुलना कीजिए।

उ. प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थानपतित हैं, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) समुच्चय जीव में वेदनीय कर्म आश्री सभी बोलों में भंग लिखिए।

उ. समुच्चय जीव, सलेशी, शुक्ललेशी, शुक्लपक्षी, सम्यग्दृष्टि, सज्ञानी, केवलज्ञानी, नोसंज्ञा बहुता, अवेदी, अकषायी, साकार, अनाकार उपयोग इन 12 बोलों में पहला, दूसरा, चौथा भांगा पाया जाता है।

अलेशी अयोगी में केवल एक चौथा भांगा पाया जाता है।

शेष 33 बोलों में पहला, दूसरा भांगा पाया जाता है।

(ii) 47 बोल की बंधी में 8वें उद्देशक में मनुष्य में 47 में से नहीं पाये जाने वाले बोल लिखिए।

उ. समुच्चय जीव, अलेशी, मिश्रदृष्टि, विभंगज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, नो संज्ञा बहुता, अवेदी, अकषायी, मन योगी, वचन योगी, अयोगी।

(iii) उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्यों में स्थिति की अपेक्षा एक स्थानपतित होने का कारण लिखिए।

उ. उत्कृष्ट अवगाहना वाले युगलिक मनुष्यों की स्थिति तीन पल्योपम की होती है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्यों की स्थिति में असंख्यात भाग-हीनाधिक का ही स्थान बनता है।

(iv) जघन्य स्थिति वाले मनुष्यों की आपस में द्रव्य, प्रदेश आदि की अपेक्षा तुलना कीजिए।

उ. जघन्य स्थिति वाला मनुष्य, जघन्य स्थिति वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, बीस वर्णादि की पर्यायों तथा चार उपयोग (दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(v) उत्कृष्ट अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की आपस में तुलना करने पर स्थिति के तुल्य होने का कारण लिखिए।

उ. उत्कृष्ट अवगाहना वाले अचित्त महास्कन्ध की स्थिति तुल्य होती है। बनने की प्रक्रिया की अपेक्षा चार समय की तथा सम्पूर्ण लोकव्यापी रहने की अपेक्षा एक समय की स्थिति होती है। उत्कृष्ट अवगाहना एक समय ही रहने के कारण स्थिति तुल्य होती है।

(vi) समुच्चय क्षेत्र की अपेक्षा पुद्गलों की आपस में तुलना कीजिए।

उ. जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं। क्योंकि जघन्य अवगाहना वाला पुद्गल, जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाला पुद्गल भी इसी तरह कहना, किन्तु इसमें स्थिति की अपेक्षा तुल्य कहना। मध्यम अवगाहना वाला पुद्गल, मध्यम अवगाहना वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, वर्णादि 20 बोलों के पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(vii) परमाणु पुद्गल की आपस में तुलना करते हुए उनमें द्रव्य, प्रदेश आदि के अन्तर को समझाइए।

उ. द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है। पाँच वर्ण, दो गन्ध, पाँच रस, चार स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष) इन 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(viii) 256 राशि के थोकड़े में वर्णित 14 बोलों की सम्मिलित अल्पबहुत्व में से प्रथम 6 बोल लिखिए।

1. सबसे थोड़े आयु के बंधक, 2. अपर्याप्त संख्यात गुणा, 3. सुप्त संख्यात गुणा, 4. समुद्घात करने वाले संख्यात गुणा, 5. सातावेदनीय वेदने वाले संख्यात गुणा, 6. इन्द्रिय उपयोग वाले संख्यात गुणा।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : सातवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) 5 अनुत्तर के देवों में 47 बोल में से कितने बोल मिलते हैं-
(क) 26 (ख) 27
(ग) 31 (घ) 33 (क)

(b) भगवती सूत्र के 26वें शतक का द्वितीय उद्देशक है-
(क) अन्तर उववन्ना (ख) परम्पर उववन्ना
(ग) अन्तर अवगाढ (घ) परमपर अवगाढ (क)

(c) मोहनीय कर्म का बंध कौनसे गुणस्थानों में होता है-
(क) 1 से 13 (ख) 1 से 9
(ग) 1 से 10 (घ) 1 से 7 (ख)

(d) 47 बोल में से तेउकाय में लेश्या के कितने बोल मिलते हैं-
(क) 3 (ख) 5
(ग) 4 (घ) 2 (ग)

(e) जीव पज्जवा का अधिकार कौनसे स्थान पर है-
(क) पन्नवणा सूत्र पद 15 (ख) पन्नवणा सूत्र पद 5
(ग) भगवती सूत्र शतक 26 (घ) भगवती सूत्र शतक 6 (ख)

(f) सभी जीवों के आत्मप्रदेश होते हैं-
(क) संख्यात (ख) असंख्यात
(ग) अनन्त (घ) 1 (ख)

(g) उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य में कितने उपयोग मिलते हैं-
(क) 8 (ख) 6
(ग) 9 (घ) 12 (ख)

(h) मनुष्य कैसा अवधिज्ञान लेकर उत्पन्न होते हैं-
(क) जघन्य (ख) मध्यम
(ग) उत्कृष्ट (घ) उपरोक्त सभी (ख)

(i) परमाणु अधिक से अधिक कितने आकाश प्रदेश पर ठहर सकता है-
(क) असंख्यात (ख) संख्यात
(ग) 1 (घ) अनन्त (ग)

(j) अठफरसी पुद्गल कम से कम कितने आकाश प्रदेशों पर ठहर सकता है-
(क) 1 (ख) संख्यात
(ग) असंख्यात (घ) अनन्त (ग)

(k) 1 समय की स्थिति किस पुद्गल की संभव है-
(क) परमाणु (ख) संख्यात-असंख्यात प्रदेशी
(ग) अनन्त प्रदेशी (घ) तीनों की (घ)

(l) 256 राशि में पर्याप्त की कितनी राशि है-
(क) 252 (ख)254
(ग) 4 (घ) 2 (ख)

(m) अनाकार उपयोग वाले से साकार उपयोग वाले कितने गुणा है-

(क) पन्द्रह गुणा (ख) इगतीस गुणा

(ग) तीन गुणा (घ) सात गुणा (ग)

(n) आठों ही कर्मों की भजना किसमें हैं-

(क) संज्ञी में (ख)संयत में

(ग) आहारक में (घ) नो सूक्ष्म-नो बादर में (ख)

(o) अपरीत में गुणस्थान है-

(क) 1 से 14 (ख)1 से 3

(ग) पहला (घ) पहला, तीसरा (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) वेदनीय कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों का बंध निरन्तर होता है। (नहीं)

(b) 7वें से 14वें गुणस्थान वाले नियमा नो संज्ञा बहुता होते हैं। (हाँ)

(c) अभवी जीव शुक्ल लेशी नहीं होता है। (नहीं)

(d) कृष्ण लेशी भवनपति अगले भव में मोक्षगामी हो सकता है। (हाँ)

(e) तेजोलेशी पृथ्वीकाय का जीव पर्याप्त अवस्था में तेजो लेशी नहीं होता है। (हाँ)

(f) जीव पज्जवा में एकस्थान पतित से तात्पर्य असंख्यात गुण हीनाधिक से है। (नहीं)

(g) जीवों की परस्पर तुलना में स्थिति का अधिकतम स्थान 'षट्स्थानपतित' है। (नहीं)

(h) जीव पज्जवा में उत्पत्ति के प्रथम समय चक्षुदर्शन नहीं माना है। (नहीं)

(i) कोई भी पुद्गल अनन्त आकाश प्रदेशों को अवगाहित नहीं करता है। (हाँ)

(j) पुद्गलों में जघन्य एक गुण काला वर्ण सिर्फ परमाणु में होता है। (नहीं)

(k) उत्कृष्ट अवगाहना चौफरसी स्कन्धों की होती है, अठफरसी की नहीं। (हाँ)

(l) 256 राशि से सबसे अधिक जीव पर्याप्त है। (नहीं)

(m) असाता कम जीवों को, साता अधिक जीवों को होती है। (नहीं)

(n) 50 बोल की बंधी का अधिकार भगवती सूत्र के तीसरे शतक में है। (नहीं)

(o) भाषक में सात कर्मों की नियमा, वेदनीय की भजना है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	मोहकर्म आश्री अकषायी में	(क) 93	तीसरा, चौथा भंग
(b)	ज्ञानावरणीय कर्म आश्री सलेशी में	(ख) वर्णादि 16	चारों भंग
(c)	वेदनीय कर्म आश्री अवेदी में	(ग) तीन उपयोग	पहला, दूसरा, चौथा भंग
(d)	आयु कर्म आश्री कृष्ण पक्षी में	(घ) 32	पहला, तीसरा भंग
(e)	जीव पज्जवा में नारकी के अलावा	(च) 7 कर्म की नियमा, आयु की भजना	93
(f)	जीव पज्जवा में द्वीन्द्रिय के अलावा	(छ) तीसरा, चौथा भंग	81
(g)	जघन्य अवगाहना वाला त्रीन्द्रिय	(ज) पहला, दूसरा, चौथा भंग	पाँच उपयोग
(h)	जघन्य स्थिति वाला त्रीन्द्रिय	(झ) पहला, तीसरा भंग	तीन उपयोग
(i)	असंख्यात प्रदेशावगाढ़ पुद्गल	(य) 192	वर्णादि 20
(j)	असंख्यात प्रदेशी पुद्गल	(र) चारों भंग	वर्णादि 16
(k)	समुद्घात करने वालों की राशि	(ल) 81	8

(l)	इन्द्रिय उपयोग वालों की राशि	(व) वर्णादि 20	32
(m)	साकार उपयोग वालों की राशि	(क्ष) पाँच उपयोग	192
(n)	असंज्ञी	(त्र) वेदनीय कर्म की भजना, 7 अबंध	7 कर्म की नियमा, आयु की भजना
(o)	केवल ज्ञान	(ज्ञ) 8	वेदनीय कर्म की भजना, 7 अबंध

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a)	तिर्यंच पंचेन्द्रिय के 40 बोलों में से मुझमें आयुकर्म आश्री तीसरा, चौथा भंग मिलता है।	मिश्र दृष्टि
(b)	47 बोलों में से मुझमें 35 बोल मिलते हैं।	नरक
(c)	अलेशी-अयोगी को छोड़ मुझमें मोहकर्म आश्री चौथा भंग मिलता है।	केवलज्ञानी
(d)	जीव पज्जवा के थोकड़े में हमारे 375 अलावे हैं।	पाँच स्थावर
(e)	जीव पज्जवानुसार मैं ऐसा ठाण हूँ, जिसमें अधिकतम अन्तर संख्यात गुणा है।	त्रिस्थान पतित
(f)	मैं ऐसी अवगाहना हूँ जो उत्पत्ति के प्रथम समय में होती है।	जघन्य अवगाहना
(g)	तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जघन्य अवगाहना मेरी नहीं होती है।	युगलिक
(h)	उत्कृष्ट श्रुतज्ञानी मनुष्य की तुलना में अवगाहना चतुस्थानपतित मेरी अपेक्षा से हैं।	मारणान्तिक समुद्घात
(i)	छह द्रव्यों में से मात्र मैं ही रूपी हूँ।	पुद्गलास्तिकाय
(j)	मेरे दो भेद हैं-1. चौफरसी, 2. अठफरसी।	अनन्त प्रदेशी स्कन्ध
(k)	मैं कम से कम परमाणुओं से बना स्कन्ध हूँ।	द्वि प्रदेशी स्कन्ध
(l)	मैं उत्कृष्ट अवगाहना वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध हूँ।	अचित महास्कन्ध
(m)	मुझमें एक समय में 1 वर्ण, 1 गन्ध, 1 रस एवं दो स्पर्श होते हैं।	परमाणु
(n)	टीकाकारों ने हम दोनों को अचरम कहा है।	अभवी और सिद्ध
(o)	मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें 6 कर्मों के बन्ध की नियमा है।	सूक्ष्म सम्पराय/10वाँ

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) मोह कर्म आश्री चौथा भंग किन गुणस्थानों में संभव है ?
10,12,13,14वें गुणस्थान में।

(b) तेजोलेशी पृथ्वीकाय में आयु कर्म आश्री कौनसा भंग पाया जाता है ?
तीसरा भंग- बांधा था, नहीं बांधता है, बांधेगा।

(c) समुच्चय जीव की अपेक्षा आयु कर्म आश्री पहला, तीसरा, चौथा भंग किन बोलों में पाया जाता है ?
नो संज्ञा बहुता में, मनःपर्यवज्ञानी में।

(d) नारकी से नारकी की तुलना में अवगाहना की अपेक्षा स्थान बताइए।
चतुस्थानपतित।

(e) अवगाहना की अपेक्षा द्विप्रदेशी स्कन्ध की, द्विप्रदेशी स्कन्ध से परस्पर तुलना कीजिए।
कथंचित् तुल्य, कथंचित् 1 प्रदेश हीनाधिक।

(f) संख्यात प्रदेशावगाढ़ पुद्गल की, संख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गल से परस्पर तुलना में प्रदेश की अपेक्षा स्थान बताइए।
षट्स्थानपतित।

(g) जघन्य अवगाहना वाले संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की, जघन्य अवगाहना वाले संख्यात प्रदेशी स्कन्ध से परस्पर तुलना में स्थिति की अपेक्षा स्थान बताइए।
चतुस्थानपतित।

(h) तीन योगों में 8 कर्मों की नियमा-भजना बताइए।
7 कर्म की भजना, वेदनीय कर्म की नियमा।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) जघन्य में वेदनीय कर्म आश्री तीन भंग किन 12 बोलों में मिलते हैं ?
समुच्चय जीव, सलेशी, शुक्ललेशी, शुक्लपक्षी, सम्यग्दृष्टि, सज्ञानी, केवलज्ञानी, नोसंज्ञा बहुता, अवेदी, अकषायी, साकार,अनाकार उपयोग इन 12 बोलों में।

(b) जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की, जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से परस्पर स्थिति, अवगाहना व उपयोग की अपेक्षा तुलना कीजिए।
अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है,मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, तीन उपयोग (श्रुतज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(c) जीव पज्जवा से स्पष्ट कीजिए कि मनःपर्यवज्ञान में मारणान्तिक समुद्घात नहीं होती।
मनःपर्यायज्ञानी की अवगाहना त्रिस्थानपतित ही बतलाई है, इससे सिद्ध होता है कि वह मारणान्तिक समुद्घात नहीं करता। यदि मारणान्तिक समुद्घात करता तो उसकी अवगाहना चतुस्थानपतित हो जाती।

(d) अवधिज्ञानी मनुष्य की, अवधिज्ञानी मनुष्य से तुलना में स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित क्यों कहा है?
जघन्य अवधिज्ञान मनुष्यों में पर्याप्त अवस्था में होता है तथा उत्कृष्ट अवधिज्ञान भाव से चारित्रवान मनुष्य को होता है, इसी कारण जघन्य व उत्कृष्ट अवधिज्ञान की अपेक्षा मनुष्य की अवगाहना त्रिस्थानपतित ही होती है।

(e) द्वीन्द्रिय की, द्वीन्द्रिय से परस्पर अवगाहना, स्थिति, उपयोग की अपेक्षा तुलना कीजिए।
अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(f) जघन्य स्थिति वाले परमाणु की जघन्य स्थिति वाले परमाणु से परस्पर अवगाहना, स्थिति, वर्णादि की अपेक्षा तुलना कीजिए।
अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(g) मध्यम प्रदेशी स्कन्ध की, मध्यम प्रदेशी स्कन्ध से परस्पर प्रदेश, अवगाहना, स्थिति की अपेक्षा तुलना कीजिए।
प्रदेश- षट्स्थानपतित, अवगाहना- चतुस्थानपतित, स्थिति- चतुस्थानपतित।

(h) 256 राशि में वर्णित अपर्याप्त एवं सुप्त से तात्पर्य कौनसे जीवों से हैं ?
अपर्याप्त- लब्धि अपर्याप्त से जो नियमा अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं।
सुप्त- सभी अपर्याप्त जीव। लब्धि तथा करण दोनों अपर्याप्त जीव सुप्त माने जाते हैं।

कक्षा : सातवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2020)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) शुक्ल पाक्षिक जीव में गुणस्थान है-
(क) 2 से 14 (ख) 4 से 14
(ग) 1 से 14 (घ) 6 से 14 (ग)

(b) 47 बोलों में से तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में बोल मिलते हैं-
(क) 35 (ख) 40
(ग) 47 (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(c) 47 बोलानुसार नरक में कितने अज्ञान मिलते हैं-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 2 (घ) उपर्युक्त सभी (ख)

(d) 47 बोलों में वेद के कितने बोल हैं-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 5 (घ) 6 (ग)

(e) अवगाहना की अपेक्षा एक पृथ्वीकाय दूसरे पृथ्वीकाय की अपेक्षा से है -
(क) द्विस्थानपतित (ख) त्रिस्थानपतित
(ग) चतुःस्थानपतित (घ) कोई नहीं (ग)

(f) उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य में उपयोग होते हैं -
(क) 9 (ख) 6
(ग) 4 (घ) उपर्युक्त कोई नहीं (ख)

(g) जघन्य अवगाहना वाले तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में उपयोग होते हैं-
(क) 9 (ख) 6
(ग) 4 (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं (ख)

(h) मनुष्य में मध्यम अवगाहना होती है-
(क) संख्यात वर्षायुष्क की (ख) युगलिक की
(ग) दोनों की (घ) कोई नहीं (ग)

(i) अजीव पज्जवा में द्रव्य के कितने अलावे हैं-
(क) 12 (ख) 13
(ग) 03 (घ) 35 (ख)

(j) परमाणु में स्पर्श मिलते हैं-
(क) 4 (ख) 8
(ग) 2 (घ) स्पर्श नहीं मिलते (क)

(k) स्थिति की अपेक्षा एक परमाणु दूसरे परमाणु से है-
(क) द्विस्थानपतित (ख) चतुःस्थानपतित
(ग) षट्स्थानपतित (घ) कोई नहीं (ख)

(l) 256 राशि में पर्याप्त की राशि है-
(क) 252 (ख) 254
(ग) 240 (घ) 255 (ख)

(m) 256 राशि में आयु के बन्धक हैं-
(क) सबसे थोड़े (ख) उत्कृष्ट
(ग) जघन्य से संख्यात गुणा (घ) कोई नहीं (क)

(n) 50 बोल की बंधी का बधिकार है-
(क) पन्नवणा में (ख) भगवती में
(ग) जीवाभिगम में (घ) समवायांग में (ख)

(o) 8 कर्मों की भजना है-
(क) मिथ्यादृष्टि में (ख) भवी में
(ग) अभवी में (घ) अपरीत्त में (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) 7 से 14 गुणस्थान में जीव नियमा नोसंज्ञा बहुता होता है। (हाँ)

(b) 13वें गुणस्थान के चरम समय में वेदनीय कर्म आश्री दूसरा भंग मिलता है। (हाँ)

(c) सर्वार्थसिद्ध में आयु बांधने वाला अगले भव में भी निश्चित आयु का बंध करता है। (नहीं)

(d) कृष्णपक्षी अधिकतम अर्धपुद्गल परावर्तन काल संसार में रहता है। (नहीं)

(e) प्रदेश की अपेक्षा से सभी जीव तुल्य नहीं है। (नहीं)

(f) जीव पज्जवा में शक्ति की अपेक्षा चक्षुदर्शन को भी उत्पत्ति के प्रथम समय में माना है। (हाँ)

(g) जघन्य अवगाहना उत्पत्ति के प्रथम समय में ही होती है। (हाँ)

(h) मनुष्य जिस अवधिज्ञान के साथ उत्पन्न होते हैं, वह मध्यम होता है। (हाँ)

(i) छह द्रव्यों में से मात्र पुद्गलास्तिकाय ही रूपी होता है। (हाँ)

(j) असंख्यात समय की स्थिति सभी प्रकार के पुद्गलों की संभव है। (हाँ)

(k) जीव की अवगाहना जीवन पर्यन्त की होती है, स्थिति वर्तमान की। (नहीं)

(l) असत् कल्पना से सम्पूर्ण जीव राशि अनन्तानन्त हैं। (नहीं)

(m) अनाकार उपयोग से साकार उपयोग वाले अधिक हैं। (हाँ)

(n) 6 से 12 गुणस्थान में वेदनीय की नियमा व 7 कर्मों की भजना है। (हाँ)

(o) परीत्त में मात्र पहला गुणस्थान होता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	47 बोल में से भवनपति में बोल	(क) 37
(b)	47 बोल में से 5 अनुत्तर में बोल	(ख) 26
(c)	परस्पर उववन्ना	(ग) 47 बोल की बंधी का तृतीय उद्देशक
(d)	अचरम	(घ) 47 बोल की बंधी का 11वाँ उदेशक
(e)	जीव पज्जवा का थोकड़ा	(च) पन्नवना सूत्र पाँचवा पद
(f)	256 राशि का थोकड़ा	(छ) पन्नवणा सूत्र तीसरा पद
(g)	जीव पज्जवा में कुल अलावे	(ज) 2138
(h)	अजीव पज्जवा में कुल अलावे	(झ) 1076
(i)	93	(य) जीव पज्जवा में तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कुल अलावे
(j)	अचित्त महास्कन्ध	(र) उत्कृष्ट अवगाहना वाला पुद्गल
(k)	आहारक	(ल) 1 से 13 गुणस्थान
(l)	स्कन्ध	(व) सम्पूर्ण वस्तु
(m)	98	(क्ष) जीव पज्जवा में मनुष्य के कुल अलावे
(n)	चरम	(त्र) 1 से 14 गुणस्थान
(o)	अपर्याप्त	(ज्ञ) 2 राशि

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	47 बोल की बन्धी में 7 कर्म आश्री पहला भंग मेरी अपेक्षा से है।	अभव्य जीव
(b)	मैं एक ऐसा कर्म हूँ, जिसका बंध निरन्तर नहीं होता है।	आयुष्य कर्म
(c)	मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें सवेदी तथा अवेदी दोनों जीव मिल सकते हैं।	9वाँ गुणस्थान
(d)	केवलज्ञानी मनुष्य की अवगाहना मेरी अपेक्षा से चतुःस्थानपतित कही है।	केवली समुद्घात
(e)	मेरा आशय असंख्यात भाग हीनाधिक से है।	एक स्थानपतित
(f)	मुझमें प्रायः स्थिति के अनुपात में अवगाहना बढ़ती है।	मनुष्य
(g)	मनःपर्यव ज्ञान मुझको ही होता है।	संयमी मनुष्य/ साधु
(h)	हम पुद्गल के अविभाज्य अंश हैं।	प्रदेश व परमाणु
(i)	मेरा तात्पर्य संख्या से है।	द्रव्य
(j)	मेरा तात्पर्य काले वर्ण की सबसे कम मात्रा से है।	एक गुण काला
(k)	256 राशि में मेरी राशि 8 है।	समुद्घात करने वाले
(l)	मुझे अनाकार उपयोग भी कहते हैं।	दर्शन
(m)	हम ऐसे देव हैं जो भवी ही होते हैं।	अनुत्तर विमानवासी
(n)	मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें ज्ञानोपयोग ही होता है।	10वाँ गुणस्थान
(o)	मैं ऐसा ठाण हूँ, जिसमें अधिकतम अन्तर असंख्यात गुण हीनाधिक का है।	चतुःस्थानपतित

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2 = (16)**

(a) तेजोलेशी मनुष्य में मोहनीय कर्म आश्री चार भंगों में कौन-कौनसे भंग मिलते हैं ?

उ. पहला और दूसरा भंग मिलता है।

(b) अकषायी जीव में आयुकर्म आश्री चार भंगों में कौन-कौनसे भंग मिलते हैं ?

उ. अकषायी जीव तीसरा और चौथा भंग पाया जाता है।

(c) जीव पज्जवा के थोकड़े में स्थिति की अपेक्षा अधिक से अधिक चतुःस्थानपतित ही क्यों होता है ?

उ. किसी भी जीव की एक भव की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त से लेकर उत्कृष्ट 33 सागरोपम (असंख्यात काल) तक की ही होती है, उससे अधिक अर्थात् अनन्तकाल की नहीं हो सकती। जघन्य से उत्कृष्ट स्थिति में असंख्यात गुणा तक अन्तर होने से अधिक से अधिक चतुःस्थानपतित ही होती है।

(d) अवगाहना एवं उपयोग की अपेक्षा से जघन्य मतिज्ञान वाले मनुष्य की परस्पर तुलना कीजिए।

उ. जघन्य मतिज्ञान वाला मनुष्य जघन्य मतिज्ञान वाले मनुष्य से अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है। मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, तीन उपयोग (श्रुतज्ञान और दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(e) अजीव पज्जवा के आधार पर द्विस्थानपतित का आशय लिखिए।

उ. द्विस्थानपतित से आशय 1. संख्यात भाग हीन, संख्यात भाग अधिक, 2. संख्यात गुण हीन, संख्यात गुण अधिक से है।

(f) संख्यात प्रदेशावगाढ़ पुद्गल की प्रदेश एवं अवगाहना की अपेक्षा परस्पर तुलना कीजिए।

उ. प्रदेश की अपेक्षा-षट्स्थानपतित। अवगाहना की अपेक्षा- द्विस्थानपतित।

(g) 256 राशि के अनुसार सुप्त जीव कौनसे हैं ?

उ. सुप्त जीवों से तात्पर्य सभी अपर्याप्त जीवों से है। अर्थात् लब्धि अपर्याप्त व करण अपर्याप्त दोनों का समावेश सुप्त जीवों में किया जाता है।

(h) **भाषक में आठ कर्मों की नियमा-भजना लिखिए।**

उ. सात कर्मों की भजना तथा वेदनीय नियमा।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) **सम्यग्दृष्टि विकलेन्द्रिय में आयुकर्म आश्री केवल तीसरा भंग ही क्यों पाया जाता है ?**

उ. विकलेन्द्रिय में सास्वादन सम्यग्दृष्टिपना उत्पत्ति समय से जघन्य 1 समय उत्कृष्ट 6 आवलिका पर्यंत ही पाया जाता हैं। सबसे कम आयुष्य वाला जीव अर्थात् क्षुल्लक भव 256 आवलिका आयुष्य वाला जीव भी लगभग 171 आवलिका पूर्ण किये बिना आयुष्य नहीं बाँधता है अतः विकलेन्द्रिय समकित में आयुष्य नहीं बाँधेगा चूँकि विकलेन्द्रिय अगले भव में केवली नहीं बन सकते, अतः भविष्य में आयुष्य बान्धेंग ही, इसलिए केवल तीसरा भांगा ही पाया जाता है।

(b) **47 बोल की बन्धी में 2,4,6,8वें उद्देशकों में मनुष्य में कौन-कौनसे बोल नहीं मिलते हैं ?**

उ. मनुष्य में अलेशी, मिश्रदृष्टि, विभंगज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, नो संज्ञा बहुता, अवेदी, अकषायी, मन योगी, वचन योगी, अयोगी नहीं मिलते हैं।

(c) **अवगाहना एवं उपयोग की अपेक्षा से जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति वाले तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय की परस्पर तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य स्थिति वाले तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय की परस्पर तुलना करने पर अवगाहना चतुःस्थानपतित तथा उपयोग- 2 अज्ञान, 2 दर्शन इन चार की अपेक्षा षट्स्थानपतित होते हैं।

उत्कृष्ट स्थिति वाले तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय की परस्पर तुलना करने पर अवगाहना चतुस्थानपतित तथा उपयोग- 2 ज्ञान, 2 अज्ञान, 2 दर्शन इन 6 की अपेक्षा षट्स्थानपतित होते हैं।

(d) **जघन्य एवं उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिक की स्थिति की अपेक्षा परस्पर तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य अवगाहना वाला नैरयिक जघन्य अवगाहना वाले नैरयिक से स्थति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिकों स्थिति की अपेक्षा द्विस्थानपतित (दुट्ठाणवडिया) है।

(e) **स्थिति एवं उपयोग की अपेक्षा से मध्यम चक्षुदर्शन वाले मनुष्य की परस्पर तुलना कीजिए।**

उ. मध्यम चक्षुदर्शन वाला मनुष्य भी उत्कृष्ट चक्षुदर्शन वाले मनुष्य से स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित और दस उपयोग (चार ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना।

(f) **मध्यम अवगाहना वाले चतुःप्रदेशी स्कन्ध की अवगाहना की अपेक्षा परस्पर तुलना कीजिए।**

उ. कदाचित् हीन, कदाचित् अधिक तथा कदाचित् तुल्य होती है। यदि हीन हो तो एक प्रदेश हीन होती है। अधिक हो तो एक प्रदेश अधिक होती है। कदाचित् तुल्य हो तो दो अथवा तीन प्रदेशावगाढ़ होती है।

(g) **उत्कृष्ट अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की परस्पर तुलना कीजिए।**

उ. उत्कृष्ट अवगाहना वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, उत्कृष्ट अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है। वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

(h) **जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल की परस्पर तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य अवगाहना वाला पुद्गल, जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

कक्षा : सातवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) **47 बोल में से तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में कितने बोल मिलते हैं-**

(क) 47 (ख) 37

(ग) 40 (घ) 34 (ग)

(b) **47 बोलों का वर्णन भगवती सूत्र के कौनसे शतक में है-**

(क) 11 (ख) 26

(ग) 6 (घ) 5 (ख)

(c) **सभी जीवों के आत्म प्रदेश होते हैं-**

(क) समान (ख) असमान

(ग) दोनों (घ) कहना असंभव (क)

(d) **उत्पत्ति के प्रथम समय की अवगाहना होती है-**

(क) जघन्य (ख) मध्यम

(ग) उत्कृष्ट (घ) अनुत्कृष्ट (क)

(e) **जीव पज्जवा के थोकड़े में कुल अलावों की संख्या हैं-**

(क) 1209 (ख) 375

(ग) 2138 (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(f) **जीव पर्याय होती है-**

(क) संख्यात (ख) असंख्यात

(ग) अनन्त (घ) कहना असंभव (ग)

(g) **कितने द्वारों के आधार पर जीव पज्जवा का वर्णन है-**

(क) 11 (ख) 10

(ग) 9 (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

(h) **छह द्रव्यों में से कितने रूपी हैं-**

(क) 5 (ख) 4

(ग) 1 (घ) 6 (ग)

(i) **अनन्त प्रदेशी स्कन्ध कितने प्रकार के हैं-**

(क) 2 (ख) 3

(ग) 4 (घ) 8 (क)

(j) **वस्तु का अविभाज्य अंश है-**

(क) स्कन्ध (ख)देश

(ग) प्रदेश (घ) तीनों ही (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) अठफरसी स्कंध की जघन्य अवगाहना एक आकाश प्रदेश होती है। (नहीं)

(b) पर्याप्त जीवों से अपर्याप्त जीव संख्यात गुणा है। (नहीं)

(c) अनाकार उपयोग वाले जीव साकार उपयोग वाले से कम हैं। (हाँ)

(d) सास्वादन समकित वाले अपर्याप्त अवस्था में काल कर सकते हैं। (नहीं)

(e) तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति 1 करोड़ पूर्व की होती है। (नहीं)

(f) युगलिक में उत्कृष्ट उपयोग नहीं होता है। (हाँ)

(g) संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य की जघन्य अवगाहना में दो ही ज्ञान होते हैं। (नहीं)

(h) एकान्त सम्यक् दृष्टि होने से अनुत्तर विमान के देव शुक्ल पाक्षिक है। (हाँ)

(i) नोसंज्ञा बहुता जीव में गुणस्थान 7 से 14 होते हैं। (हाँ)

(j) तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त में अवधि का उपयोग नहीं होता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	नरक में 47 बोल में से बोल	(क) 252	35
(b)	तेउकाय में 47 बोल में बोल	(ख) 34	26
(c)	जागृत की राशि	(ग) 240	252
(d)	समुद्घात नहीं करने वालों की राशि	(घ) 23	248
(e)	असातावेदनीय वेदन वालों की राशि	(च) 26	240
(f)	साकार उपयोग वालों की राशि	(छ) 25	192
(g)	भवनपति देवों में 50 बोल में से बोल	(ज) 43	35 (बोनस 1 अंक दिया जाय)
(h)	गर्भज मनुष्य में 50 बोल में से बोल	(झ) 248	43
(i)	अनुत्तर देवों में 50 बोल में से बोल	(य) 192	25
(j)	एकेन्द्रिय में 50 बोल में से बोल	(र) 35	23

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a)	मुझे छोड़कर शेष कर्मों का बंध निरन्तर होता है।	आयुष्य
(b)	47 बोल में वेदनीय कर्म आश्री चौथा भंग मुझमें मिलता है।	14वाँ गुणस्थान (मनुष्य)
(c)	केवली की अवगाहना मेरी अपेक्षा से चतुस्थान पतित कही है।	केवली समुद्घात
(d)	उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य मेरी अपेक्षा एकस्थानपतित है।	स्थिति की अपेक्षा
(e)	मेरे पाँचवे पद में अजीव पज्जवा का थोकड़ा चलता है।	प्रज्ञापना सूत्र
(f)	मैं एक ऐसा द्रव्य हूँ, जिससे प्रदेश अलग हो सकते हैं।	पुद्गलास्तिकाय
(g)	256 राशि में मेरी राशि सबसे कम है।	आयु के बंधक
(h)	मेरे 559 भेद हैं, जिनसे एक राशि भी नहीं बनती है।	प्रत्येक शरीरी
(i)	50 बोल में मैं ऐसा द्वार हूँ, जिसके आठ भेद हैं।	ज्ञान
(j)	मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें छह कर्म नियम से बंधते हैं तथा आयु व मोहनीय कर्म नहीं बंधता है।	10वाँ गुणस्थान

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) **47 बोल के 4 भंगों में तीसरा भंग कौनसा है ?**

उ. कितनेक जीवों ने कर्मों को बांधा था, नहीं बांधता है और बांधेगा।

(b) **आयुकर्म आश्री चौथा भंग किसमें पाया जाता है ?**

उ. चरम शरीरी या मनुष्यायु बांधे हुए एक भव अवतारी जीव में

(c) **एकस्थानपतित का क्या आशय है ?**

उ. एकस्थानपतित का आशय यहाँ असंख्यात भाग हीन और असंख्यात भाग अधिक से है।

(d) **उत्कृष्ट अवगाहना वाले तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में कितने उपयोग होते हैं ?**

उ. उत्कृष्ट अवगाहना वाले तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में 9 उपयोग होते है (3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 3 दर्शन)।

(e) **मनःपर्याय ज्ञानी की उत्कृष्ट अवगाहना त्रिस्थानपतित क्यों कही है ?**

उ. वह मारणान्तिक समुद्घात नहीं करता। यदि मारणान्तिक समुद्घात करता तो उसकी अवगाहना चतुस्थानपतित हो जाती।

(f) **जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में कितने व कौन-कौन से उपयोग होते हैं ?**

उ. जघन्य मतिज्ञान के सिवाय 3 उपयोग (श्रुतज्ञान, चक्षु-अचक्षु दर्शन) होते हैं।

(g) **अजीव पज्जवा के आधार पर द्विस्थानपतित का आशय लिखिए।**

उ. 1. संख्यात भाग हीन, संख्यात भाग अधिक, 2. संख्यात गुण हीन, संख्यात गुण अधिक से है।

(h) **परमाणु से परमाणु की तुलना में द्रव्य की अपेक्षा तुल्य क्यों ? लिखिए।**

उ. एक परमाणु की दूसरे परमाणु से तुलना की जा रही है। दोनों की संख्या एक-एक ही है, अतः द्रव्य की अपेक्षा तुल्य कहा गया है। यहाँ द्रव्य से तात्पर्य संख्या से है।

(i) **अवगाहना की अपेक्षा संख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गलों की परस्पर तुलना कीजिए।**

उ. संख्यात प्रदेशावगाढ़ पुद्गलों में अवगाहना की अपेक्षा संख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है, अतः अवगाहना की अपेक्षा संख्यात भाग हीन-अधिक तथा संख्यात गुण हीन-अधिक, ये द्विस्थानपतित वाले होते हैं।

(j) **256 राशि में सुप्त जीव कौन-कौन से हैं ?**

उ. लब्धि अपर्याप्त व करण अपर्याप्त दोनों का समावेश सुप्त जीवों में किया जाता है।

(k) **भाषक द्वार में आठ कर्मों की नियमा-भजना लिखिए।**

उ. 7 कर्मों की भजना वेदनीय की नियमा।

(l) **50 बोल की बंधी में वेदनीय की भजना तथा 7 का अबंध किन-किन द्वारों में है ?**

उ. नो संज्ञी नो असंज्ञी, केवलज्ञान, केवल दर्शन में

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **12x3=(36)**

(a) **मनःपर्याय ज्ञानी में आयुकर्म आश्री कौन-कौन से भंग मिलते हैं ? कारण सहित लिखिए।**

मनःपर्याय ज्ञानी में पहला, तीसरा, चौथा भंग पाया जाता है।दूसरा भांगा इसलिए नहीं पाया जाता है क्योंकि यदि ये वर्तमान में आयुष्य बांधते हैं तो वैमानिक का ही आयुष्य बांधते हैं और वैमानिक में उनको आगे भी मनुष्यायु का बंध करना ही पड़ेगा। वैमानिक से मुक्ति संभव नहीं है।

(b) **तेजोलेशी पृथ्वीकाय में आयुकर्म आश्री तीसरा भंग ही क्यों पाया जाता है ?**

तेजो लेश्या देवता से आने वाले पृथ्वी, पानी, वनस्पति जीवों में अपर्याप्त अवस्था में रहती है। यह नियम है कि देवता से आने वाले पृथ्वी, पानी, वनस्पति के जीव अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते हैं। पर्याप्त होकर ही मरते हैं। पर्याप्त अवस्था में ही अगले भव की आयु का बन्ध करते हैं। पर्याप्त अवस्था में इनमें तेजो लेश्या नहीं होने के कारण तेजो लेश्या में आयु का बन्ध नहीं करते हैं। इसलिए प्रथम दो भांगे तो पाये ही नहीं जाते हैं और चौथा भांगा भी नहीं पाया जाता, क्योंकि मोक्ष जाने के लिए उस जीव को आगे मनुष्यायु का बंध तो करना ही पड़ेगा।

(c) **भगवती सूत्र के 26वें शतक के दूसरे, तीसरे उद्देशक का नाम लिखकर दोनों का अर्थ लिखिए।**

द्वितीय उद्देशक अनन्तर उववन्ना- उन जीवों का कथन जिनको उत्पन्न हुए एक समय ही हुआ है अर्थात् प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीव।

तृतीय उद्देशक परम्पर उववन्ना- उन जीवों का कथन जिनको उत्पन्न हुए बहुत समय हो गया अर्थात् प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीवों के अलावा सभी जीवों का समावेश इस उद्देशक में हो जाता है।

(d) **मोहनीय कर्म आश्री मनुष्य में सिर्फ चौथा भंग 47 बोलों में से कितने और कौनसे बोलों में मिलता है?**

उ. **मोहनीय कर्म आश्री मनुष्य में चौथा भंग सिर्फ अलेशी, अयोगी और केवलज्ञानी में ही पाया जाता है।**

(e) **जीव पज्जवा के आधार पर चतुःस्थान पतित समझाइए।**

उ. चतुःस्थानपतित का आशय यहाँ असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन, असंख्यात गुण हीन तथा असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक व असंख्यात गुण अधिक से है।

(f) **जघन्य मतिज्ञान वाले नैरयिक की जघन्य मतिज्ञान वाले नैरयिक से तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य मतिज्ञान वाला नैरयिक जघन्य मतिज्ञान वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, वर्णादि बीस बोल की पर्यायों तथा पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। मतिज्ञान की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है।

(g) **जघन्य स्थिति वाले मनुष्य की जघन्य स्थिति वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य स्थिति वाला मनुष्य, जघन्य स्थिति वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, बीस वर्णादि की पर्यायों तथा चार उपयोग (दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(h) **तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय की तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय से तुलना कीजिए।**

उ. **एक तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय दूसरे तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थानपतित है, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श के बीस बोल के पर्यायों की अपेक्षा तथा नौ उपयोग (3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 3 दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।**

(i) **एक द्विप्रदेशी स्कन्ध की दूसरे द्विप्रदेशी स्कन्ध से तुलना कीजिए।**

उ. एक द्विप्रदेशी स्कन्ध दूसरे द्विप्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन, कथंचित् तुल्य और कथंचित् अधिक होता है। द्विप्रदेशी स्कन्ध एक प्रदेशावगाढ़ और द्विप्रदेशावगाढ़ होते हैं। जब दोनों द्विप्रदेशी स्कन्ध दो प्रदेशों पर अथवा एक प्रदेश पर अवगाहित होकर रहते हैं तब वे अवगाहना में तुल्य होते हैं। किन्तु जब एक द्विप्रदेशी स्कन्ध एक आकाश प्रदेश पर तथा दूसरा द्विप्रदेशी स्कन्ध दो आकाश प्रदेशों पर रहता है तब पहला स्कन्ध अवगाहना में एक प्रदेश हीन होता है और दूसरा स्कन्ध एक प्रदेश अधिक होता है। स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट् स्थानपतित है।

(j) **संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ़ पुद्गल की संख्यात प्रदेशावगाढ़ पुद्गल से तुलना कीजिए।**

उ. संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ़ पुद्गल, संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ़ पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य हैं, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित हैं और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं।

(k) **एक समय की स्थिति वाले पुद्गल की एक समय की स्थिति वाले पुद्गल से तुलना कीजिए।**

उ. एक समय की स्थिति वाला पुद्गल, एक समय की स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

(l) **जघन्य स्थिति वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की जघन्य स्थिति वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य स्थिति वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य स्थिति वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : सातवीं - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

कक्षा : सातवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) नारकी में 47 बोल में से ज्ञान के कितने बोल मिलते हैं-

(क) 3 (ख) 4

(ग) 5 (घ) 6 (ख)

(b) अवेदी में गुणस्थान होते हैं-

(क) 10 से 14 (ख) 9 से 14

(ग) 11 से 14 (घ) 13 से 14 (ख)

(c) प्रत्येक जीव की पर्याय होती है -

(क) संख्यात (ख) असंख्यात

(ग) अनन्त (घ) कोई नहीं (ग)

(d) संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य की जघन्य अवगाहना में ज्ञान हो सकते हैं-

(क) 2 (ख) 3

(ग) 2 अथवा 3 (घ) ज्ञान नहीं होता (ग)

(e) अजीव पर्याय का कथन प्रज्ञापना सूत्र के कौनसे पद में हैं-

(क) तीसरे (ख) पाँचवें

(ग) छठें (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(f) अजीव पर्याय के थोकड़े में संख्यात भाग हीनाधिक तथा संख्यात गुण हीनाधिक से आशय है-

(क) द्विस्थानपतित (ख) त्रिस्थानपतित

(ग) चतुःस्थानपतित (घ) कोई नहीं (क)

(g) परमाणु की उत्कृष्ट स्थिति हो सकती है-

(क) संख्यात काल (ख) असंख्यात काल

(ग) अनंतकाल (घ) 1 समय (ख)

(h) एक परमाणु में एक समय में कितने स्पर्श हो सकते हैं-

(क) 2 (ख) 4

(ग) 8 (घ) 1 (क)

(i) मोहनीय कर्म का बंध कितने गुणस्थान तक होता है-

(क) 1 से 9 (ख) 1 से 10

(ग) 1 से 11 (घ) 1 से 14 (क)

(j) सिद्ध में से 50 बोल में से कितने बोल मिलते हैं-

(क) 22 (ख) 23

(ग) 16 (घ) 25 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) अवेदी में 7 कर्मों के बंध की भजना तथा आयु का अबंध होता है। (हाँ)

(b) सम्यग्दृष्टि में आठ कर्मों के बंध की भजना है। (हाँ)

(c) जम्बूद्वीप का धर्मास्तिकाय, धर्मास्तिकाय का सम्पूर्ण स्कन्ध हैं। (नहीं)

(d) असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध चार स्पर्श वाले ही होते हैं। (हाँ)

(e) एक परमाणु पर अठ फरसी अनन्त प्रदेश वाले स्कन्ध रह सकते हैं। (नहीं)

(f) लोक अनंत प्रदेशी नहीं होता है। (हाँ)

(g) जीव पज्जवा में एक स्थान पतित का आशय असंख्यात भाग हीनाधिक है। (हाँ)

(h) सभी जीवों के आत्मप्रदेशों की संख्या बराबर नहीं होती है। (नहीं)

(i) प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीव परम्पर उववन्ना हैं। (नहीं)

(j) मिश्रदृष्टि सिर्फ अपर्याप्त अवस्था में होती है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a)	मैं ऐसा कर्म हूँ, जो जीवनकाल में एक बार ही बंधता हूँ।	आयुकर्म
(b)	मुझमें 47 बोल में से 31 बोल मिलते हैं।	विकलेन्द्रिय
(c)	मुझमें 47 बोल में से 35 बोल मिलते हैं।	नरक
(d)	मैं ऐसा सन्नी मनुष्य हूँ, जिसमें अवधि का उपयोग नहीं होता है।	युगलिक
(e)	मेरे होने पर अन्तर्मुहूर्त में नियम से केवलज्ञान हो जाता है।	परम अवधिज्ञान
(f)	मुझमें सम्पूर्ण वस्तु का समावेश होता है।	स्कन्ध
(g)	अजीव पज्जवा में मेरे अलावे 35 हैं।	अवगाहना
(h)	256 राशि में मेरी सबसे कम राशि है।	आयु के बंधक
(i)	256 में से मेरी राशि 252 हैं।	जागृत
(j)	256 में से मेरी राशि 64 हैं।	अनाकार उपयोग

प्र.4 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। 14x2 = (28)

(a) 47 बोल में से 5 अनुत्तर विमान में पाये जाने वाले 26 बोल लिखिए।

उ. समुच्चय का-1, लेश्या-2, पाक्षिक-1, दृष्टि-1, ज्ञान -4, संज्ञा -4, वेद -2, कषाय-5, उपयोग-2, योग 4 = 26

(b) मोहनीय कर्म आश्री अकषायी तथा अलेशी में मनुष्य की अपेक्षा भंग बताइए ।

उ. अकषायी में - तीसरा, चौथा भंग

अलेशी में - चौथा भंग

(c) आयुकर्म आश्री अयोगी तथा सम्यग्दृष्टि में मनुष्य की अपेक्षा भंग बताइए।

उ. अयोगी में - चौथा भंग

सम्यग्दृष्टि मनुष्य के- पहला, तीसरा, चौथा भंग

(d) जीव पज्जवा में द्रव्य तथा प्रदेश की अपेक्षा से तुल्य कहा जाता है। क्यों ?

उ. द्रव्य से- तात्पर्य जीवों की गिनती से है। जिनकी आपस में तुलना की जा रही है। अर्थात् जिस जीव की, दूसरे जीव से तुलना की जा रही है, वे दोनों संख्या में एक-एक ही है अतः द्रव्य से तुल्य कहा गया है। प्रदेश से तुल्य बताने का कारण यह है कि सभी जीवों के आत्म प्रदेशों की संख्या बराबर ही होती है।

(e) एक पृथ्वीकाय की दूसरे पृथ्वीकाय से अवगाहना व स्थिति की अपेक्षा तुलना कीजिए।

उ. अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है।

(f) उत्पत्ति के प्रथम समय में भी चक्षुदर्शन होता है। जीव पज्ज्वा के थोकड़े से कोई एक प्रमाण दीजिए।

उ. इस थोकड़े में उत्पत्ति के प्रथम समय में भी चक्षुदर्शन माना है, क्योंकि तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जघन्य अवगाहना में 6 उपयोग (2 ज्ञान, 2 अज्ञान, 2 दर्शन) की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहा है।

सभी चौरेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवों में जघन्य अवगाहना (उत्पत्ति के प्रथम समय में) में चक्षुदर्शन लब्धि की अपेक्षा से माना गया है।

(g) एक परमाणु पुद्गल की दूसरे परमाणु पुद्गल से अवगाहना एवं वर्णादि की अपेक्षा तुलना कीजिए।

उ. अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, पाँच वर्ण, दो गंध, पाँच रस, चार स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष) इन 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

(h) संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की दूसरे संख्यात प्रदेशी स्कन्ध से प्रदेश एवं अवगाहना की अपेक्षा से तुलना कीजिए।

उ. प्रदेश की अपेक्षा द्विस्थान पतित, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित।

(i) अचित्त महास्कन्ध को परिभाषित कीजिए।

उ. चौफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध जब विस्रसा परिणमन (स्वाभाविक रूप से) से सम्पूर्ण लोकव्यापी हो जाता है, तब वह अचित्त महास्कन्ध कहलाता है।

(j) अपर्याप्त व पर्याप्त की राशि लिखते हुए अल्प बहुत्व लिखिए।

उ. अपर्याप्त (लब्धि अपर्याप्त) की 2 राशि, पर्याप्त की 254 राशि

सबसे थोड़े अपर्याप्त, पर्याप्त संख्यात गुणा।

(k) अपर्याप्त से सुप्त जीव संख्यात गुणा हैं। क्यों ?

उ. अपर्याप्तकों से सुप्त संख्यात गुणा हैं क्योंकि सुप्त में लब्धि व करण दोनों ही प्रकार के अपर्याप्तकों का समावेश हो जाता है।

(l) 50 बोल में से एकेन्द्रिय में मिलने वाले 23 बोल लिखिए।

उ. वेद-1, संयत-1, दृष्टि-1, संज्ञी-1, भव्य-2, दर्शन-1, पर्याप्त-2, भाषक-1, परीत-2, ज्ञान-2, योग-1, उपयोग-2, आहारक-2, सूक्ष्म-2, चरम-2 =23 बोल

(m) अपरीत में गुणस्थान तथा 8 कर्मों की नियमा-भजना लिखिए।

उ. अपरीत- पहला गुण.। 7 कर्मों की नियमा, आयु की भजना।

(n) अनाहारक में गुणस्थान तथा 8 कर्मों की नियमा-भजना लिखिए।

उ. अनाहारक- 1,2,4,13,14वाँ गुण. व सिद्ध। सात की भजना, आयु का अबंध

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 14x3=(42)

(a) आयुकर्म आश्री मनःपर्यावज्ञानी में दूसरा भंग तथा मिश्र दृष्टि मनुष्य में प्रथम दो भंग क्यों नहीं मिलते? कारण सहित लिखिए।

उ. मनःपर्यव ज्ञान में पहला भांगा 6,7वें गुण. की अपेक्षा है। इसमें दूसरा भांगा इसलिए नहीं पाया जाता है क्योंकि यदि ये वर्तमान में आयुष्य बांधते हैं तो वैमानिक का ही आयुष्य बांधते हैं और वैमानिक में उनको आगे भी आयुष्य का बंध करना ही पड़ेगा। वैमानिक से मुक्ति सम्भव नहीं है।

मिश्र दृष्टि में आयुष्य का बंध नहीं होता है, इस कारण प्रथम दो भांगे नहीं पाये जाते हैं।

(b) तेजोलेश्या पृथ्वीकाय में आयुकर्म आश्री तीसरा भंग ही मिलता है, शेष नहीं। क्यों?

उ. तेजो लेश्या देवता से आने वाले पृथ्वी, पानी, वनस्पति जीवों में अपर्याप्त अवस्था में रहती है। यह नियम है कि देवता से आने वाले पृथ्वी, पानी, वनस्पति के जीव अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते हैं। पर्याप्त होकर ही मरते हैं। पर्याप्त अवस्था में ही अगले भव की आयु का बन्ध करते हैं। पर्याप्त अवस्था में इनमें तेजो लेश्या नहीं होने के कारण तेजो लेश्या में आयु का बन्ध नहीं करते हैं। इसलिए प्रथम दो भांगे तो पाये ही नहीं जाते हैं और चौथा भांगा भी नहीं पाया जा सकता क्योंकि मोक्ष जाने के लिए उस जीव को आगे मनुष्यायु का बंध तो करना ही पड़ेगा।

(c) सम्यग्दृष्टि समुच्चय जीव की अपेक्षा ज्ञानावरणीय कर्म आश्री चारों भंग किन-किन गुणस्थानों में कब-कब मिलेंगे ? लिखिए।

उ. पहला भांगा पहले से दसवें गुणस्थान के द्विचरम समयवर्ती जीवों की अपेक्षा, दूसरा भांगा दसवें गुणस्थान के चरम समयवर्ती क्षपक जीवों की अपेक्षा, तीसरा भांगा ग्यारहवें गुणस्थान के जीवों की अपेक्षा तथा चौथा भांगा 12, 13, 14वें गुणस्थान के जीवों की अपेक्षा पाया जाता है।

(d) भगवती सूत्र शतक 26 के दूसरे से सातवें शतक का नाम लिखिए।

उ. द्वितीय उद्देशक अनन्तर उववन्ना तृतीय उद्देशक परम्पर उववन्ना

चतुर्थ उद्देशक अनन्तर अवगाढ़ पंचम उद्देशक परम्पर अवगाढ़

छठा उद्देशक अनन्तर आहारक सातवाँ उद्देशक परम्पर आहारक।

(e) जीव पज्जवा में वर्णित त्रिस्थानपतित का आशय लिखिए।

उ. त्रिस्थानपतित का आशय यहाँ असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन तथा असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक से हैं।

(f) जघन्य मतिज्ञान वाले बेइन्द्रिय की जघन्य मतिज्ञान वाले बेइन्द्रिय से तुलना कीजिए।

उ. जघन्य मतिज्ञान वाला द्वीन्द्रिय जघन्य मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि बीस बोल पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, श्रुतज्ञान और अचक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(g) जघन्य स्थिति वाले मनुष्य की जघन्य स्थिति वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।

उ. जघन्य स्थिति वाला मनुष्य, जघन्य स्थिति वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, बीस वर्णादि की पर्यायों तथा चार उपयोग (दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(h) केवल ज्ञानी मनुष्य की केवलज्ञानी मनुष्य से तुलना कीजिए।

उ. केवल ज्ञानी मनुष्य, केवल ज्ञानी मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, केवल ज्ञान- केवलदर्शन की अपेक्षा तुल्य है।

(i) **जघन्य अवधिज्ञान वाले मनुष्य की जघन्य अवधिज्ञान वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।**

उ. **जघन्य अवधिज्ञान वाला मनुष्य, जघन्य अवधिज्ञान वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों अपेक्षा षट्स्थानपतित है। अवधिज्ञान के पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है।**

(j) **जीव पज्जवा से अनंत भाग हीनाधिक तथा अनंत गुण हीनाधिक को समझाइए।**

उ. काले वर्ण की अनन्त पर्यायों को असद्भूत स्थापना से दस हजार माना जाय और सर्व जीवों की अनन्त संख्या को सौ मानकर उससे भाग दिया जाय तो भागफल सौ आवेगा। एक जीव के काले वर्ण की पर्याय दस हजार है और दूसरे जीव के काले वर्ण की पर्याय सौ कम यानी 9900 है। चूँकि सर्व जीवों की अनन्त संख्या से भाग देने से भागफल सौ आया है अतः यह सौ, अनन्तवाँ भाग है अतः 9900 काले वर्ण की पर्याय वाला दस हजार काले वर्ण की पर्याय वाले की अपेक्षा अनन्त भाग हीन है और दस हजार काले वर्ण की पर्याय वाला अनन्त भाग अधिक है।

(k) **संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ पुद्गल की परस्पर तुलना कीजिए।**

उ. **संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ पुद्गल, संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य हैं, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थानपतित हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित हैं और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित हैं।**

(l) **जघन्य गुण काले वर्ण वाले परमाणु पुद्गल की परस्पर में तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य गुण काले वर्ण के परमाणु पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं, क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला परमाणु पुद्गल, जघन्य गुण काले वर्ण वाले परमाणु पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, दो गंध, पाँच रस और चार स्पर्श इन 11 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

(m) **जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की परस्पर में तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं, क्योंकि जघन्य स्थिति वाला पुद्गल, जघन्य स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेशी की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(n) **256 राशि के 14 बोलों की सम्मिलित अल्पबहुत्व में प्रथम छह बोलों की अल्पबहुत्व लिखिए।**

उ. **1. सबसे थोड़े आयु के बन्धक, 2. अपर्याप्त संख्यात गुणा,**
3. सुप्त संख्यात गुणा, 4. समुद्घात करने वाले संख्यात गुणा,
5. सातावेदनीय वेदने वाले संख्यात गुणा 6. इन्द्रिय उपयोग वाले संख्यात गुणा।